ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 12 June 2020

वर्तमान वैश्विक वातावरण: भारत □□□ पारिवारिक पुनरुत्थान की संभावना और आवश्यकता

डॉ० रीता कुमारी
उच्चतर माध्यमिक शिक्षिका
+2 भोला उच्च विद्यालय डेवढ़, घोघरडीहा, मधुबनी
पता :- राजनगर गंज, मधुबनी, बिहार

वर्तमान समय संसार-सागर में जो उथल-पुथल मची हुई है, वह चिंता का विषय अवश्य है, परंतु उससे कहीं अधिक चिंतन का विषय है। इस मंथन में हमें विष का भी सामना करना पड़ेगा, परंतु सजगता से धैर्यपूर्वक क्रियाशील र□□□, तो अमृत-प्राप्ति की संभावना भी प्रबल है। समस्याओं पर चिंता करने की बजाय, यदि संभावनाएँ तलाश कर उन पर चिंतन करें, तो उसे सीढ़ी बनाकर हम समाधान तक पहुंच सकते हैं। उन्हीं संभावनाओं में से एक है-"भारत में पारिवारिक पुनरुत्थान की संभावना"।

पारिवारिक पुनरुत्थान, सामाजिक और सांस्कृतिक पुनरुत्थान की पहली कड़ी है।बेशक, विश्व 'वायरस' रूपी समस्याओं से ग्रस्त है, लेकिन अमावस की इस अँधेरी रात में संभावनाओं के जो छोटे-छोटे दीप नजर आ रहे हैं, उन्हें सहेजकर, दीपमालाएँ बनाकर हम काफी हद तक अंधेरा दूर कर सकते हैं।

वेद, पुराण और साहित्य में वर्णित जिस आदर्श परिवार में भारत बसता था, वह कालांतर में आधुनिकीकरण और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के नाम पर बिखर गया। संयुक्त परिवार एकाकी हो गया। जिसका नैतिक मूल्य हम अब तक चुका रहे हैं। इस बिखराव के कुछ अतिमहत्वपूर्ण कारण थे, जिन पर मनन आवश्यक है।

वर्तमान वैश्विक वातावरण, हमारी भागती जिंदगी में कुछ पल ठहरकर, उन पर मनन करने का एक मौका दे रहा है। वर्तमान समय □□□ लोग अन्य देशों से अपने देश की ओर, अन्य राज्यों से अपने राज्य की ओर, अन्य जिलों से अपने जिला की ओर, अन्य गाँव से अपने गाँव की ओर, अन्य घरों से अपने घर की ओर.... जिस तरह से लौट रहे हैं, उससे भारत में 'पारिवारिक-पुनरुत्थान' की प्रबल संभावनाएँ दिखाई दे रही है।

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 12 June 2020

दूसरी ओर यही वह समय है, जब हमें अपनों की जरूरत है। हमें अपने उसी भरे-पूरे परिवार की आवश्यकता महसूस हो रही है। आज चाहकर भी, लाखों देकर भी, कोई किसी की सहायता नहीं ले सकता है.... और चाहकर भी, लाखों लेकर भी, कोई किसी की सहायता नहीं करना चाहता है। कैसी विडंबना है!

वर्तमान वैश्विक वातावरण में भारतीय परिवार के पुनरुत्थान की क्या संभावनाएँ हैं और इसकी आवश्यकता हमें क्यों है ?- इसके लिए प्राचीनकाल से अब तक, भारतीय परिवार के महत्व और उसके बिखराव के कारणों पर गहरा आत्ममंथन करना होगा। वक्त के करवट लेने से जो वैश्विक परिदृश्य बना है, उसमें भारतीय परिवार के पुनरुत्थान की काफी संभावनाएँ नजर आ रही हैं, उन्हें कतई नजरअंदाज न कर, सफल बनाने की हर संभव कोशिश करनी चाहिए।

परिवार: सामाजिक संगठन की पहली इकाई

मनुष्य की समस्त सामाजिक समस्याओं में परिवार सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्राथमिक, आधारभूत, सर्वव्यापी सामाजिक संस्था है। प्रत्येक मनुष्य किसी-न-किसी परिवार का सदस्य अवश्य होता है। जन्म के समय मनुष्य सामाजिक प्राणी नहीं होता है, किंतु संपर्क और संगति से उसका मानवता की ओर विकास होता है। मनुष्य का उत्कर्ष उसके परिवारिक जीवन के माध्यम से होता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक सारी अवस्था पारिवारिक संगठन के अंतर्गत ही संचालित होती है। मनुष्य का सामाजीकरण करने में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बच्चों के प्रारंभिक आवश्यकताओं की पूर्ति, उनका पालन-पोषण परिवार में रहकर ही किया जा सकता है। बच्चों में सांस्कृतिक शिक्षा तथा एक-दूसरे के प्रति आपसी सहयोग की भावना जितने सहज और अनौपचारिक तरीके से परिवार में संभव है, उतनी किसी अन्य मानव-समूह में संभव नहीं। वस्तुतः समाज के अस्तित्व की रक्षा का संपूर्ण दायित्व परिवार का ही है।

"संस्कृति के सभी स्तरों में चाहे उन्हें उन्नत कहा जाए या अवनत, किसी-न-किसी प्रकार का पारिवारिक संगठन अनिवार्यत: पाया जाता है।"[1] 'मनुष्य का जन्म और उसका विकास परिवार में ही होता है। परिवार में ही रहकर मानव जीवन में सुख और शांति का संचार होता है। परिवार आदिम समाज से लेकर आधुनिक समाज तक परिवर्तित स्थिति में विद्यमान रहा है। परिवार मानव

 Copyright © 2020 Authors

जाति में आत्म–सुरक्षा, वंश बढ़ोतरी और जीवन में सर्वांगीण विकास का प्रमुख साधन है। परंपरा के द्वारा परिवार का संबंध भूतकाल से होता है , परंतु सामाजिक उत्तरदायित्व तथा सामाजिक विश्वास के द्वारा परिवार भविष्य से भी संबन्धित हैं।'[2]

एक सामाजिक इकाई के रूप में परिवार ऐसे व्यक्तियों कासमूह है, जो विवाह स्वत: अथवा गोद लेने के संबंधों द्वारा संगठित है। एक छोटी-सी गृहस्थी का निर्माण करते हैं और पति-पत्नी, माता–पिता, पुत्र–पुत्री, भाई-बहन के रूप में एक दूसरे की अंतर्क्रियाएँ तथा एक सामान्य संस्कृति का निर्माण और देख–रेख करते हैं। वह परिवार मानव की स्थाई मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। परिवार अपने सदस्यों का समाजीकरण तो करता ही है, साथ ही सांस्कृतिक स्थानांतरण का केंद्र बिंदु भी होता है, जो मनुष्य को समाज के मूल, रीति–रिवाज, मापदंड सिखाता है। इस प्रकार परिवार सामाजीकरण के माध्यम से संस्कृति का वाहक है।

परिवार समाज का मेरुदंड है। क्योंकि समाज की निरंतरता को बनाए रखने में ही यह एक प्रमुख माध्यम नहीं है, बल्कि व्यक्ति की मौलिक आवश्यकताओं जैसे भोजन, आवास, यौन संतुष्टि के क्षेत्र में भी परिवार एक महत्वपूर्ण माध्यम है। परिवार मनुष्य के संस्कार बनाने या जगानेवाली प्रथम पाठशाला होती है। यही कारण है कि परिवार में होने वाले परिवर्तन समाज की संरचना को प्रभावित करते हैं। मानव और मानव समाज के उन्नयन में परिवार का स्थान सर्वोपरि रहा है तथा समाज का संरक्षण और संवर्धन इसी पर अवलंबित है। 'परिवार मानव जाति में आत्म संरक्षण, वंश वर्धन और जीवन के सत्य को बनाए रखने का प्रधान साधन है। अतः हम परिवार को सामाजिक जीवन, सामाजिक व्यवस्था तथा सामाजिक संरचना का आधार भी कह सकते हैं।'[3] पारिवारिक भावना एक जीवन व्यापी व्यापार है। एक मधुर बंधन है, एक आनंदमयी दायित्व है, एक उन्मादग्रस्त त्याग है, जिसमें हँसना–रोना, सुख–दुख, आनंद–विषाद मिलकर जीवन को जीने योग्य बनाते हैं। इस प्रकार पारिवारिक जीवन का विकास करना भी व्यक्तित्व विकास का ही एक अंग है।

महेंद्र कुमार जैन के अनुसार, "परिवार एकाधिक व्यक्तियों का वह समूह है, जो परिवार या रक्त संबंध के कारण पारस्परिक हित–चिंतन करते हुए साहचर्य भाव से एक ही घर में रहकर व्यक्तित्व विकास करने के साथ-साथ परिवार के व्यक्तित्व का भी निर्माण करता है।"[4] 'परिवार का एक रूप वह है,

 Copyright © 2020 Authors

जिसमें हम जन्म लेते हैं और दूसरा रूप वह है, जिसे हम बच्चों को जन्म देते हैं। परिवार की सार्वभौमिकता इसी तथ्य से स्पष्ट हो जाती है कि कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है, जो परिवार में इन दोनों रूपों में से किसी का भी सदस्य न हो।'[5] परिवार व्यक्ति और समाज के बीच की कड़ी है। परिवार संस्कृति की रक्षा ही नहीं करता, बल्कि परंपरागत संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को स्थानांतरित करने का कार्य भी करता है। परिवार व्यक्ति का सामाजीकरण करता है। परिवार ही समाज में उसकी स्थिति, उसके विभिन्न संबंधों तथा आचार-विचार के निर्माण को निर्धारित तथा निश्चित करता है।

<u>प्राचीन भारत में परिवार का स्वरूप</u>

भारतीय संस्कृति अति प्राचीन है, और यहाँ की सामाजिक संस्थाएँ इसी प्राचीनता के योग से पल्लवित और पुष्पित हुई हैं। वास्तव में किसी भी समाज की संस्थाओं का स्वरूप और उसका संगठन उस समाज की संस्कृति द्वारा निर्धारित और संगठित होता है। भारतीय परिवार का स्वरूप भी प्राचीन संस्कृति द्वारा निर्धारित एवं संगठित है। प्रारंभिक प्राचीन भारत में व्यक्ति अपने यायावरी जीवन को त्यागकर सर्वप्रथम परिवार तथा उसके बाद समूह के रूप में संगठित हुआ।

भारत की प्राचीनतम सैंधव सभ्यता में परिवार मातृप्रधान था। ऋग्वैदिक समाज का संगठन परिवार को इकाई मानकर हुआ था, परिवार का मुखिया अन्य सदस्यों पर नियंत्रण रखता था। उत्तर वैदिक काल में भी संयुक्त परिवार प्रणाली का प्रचलन रहा परंतु परिवार अधिकाधिक पितृसत्तात्मक होता गया। बौद्ध-युग में भी हिंदू परिवार ज्यादातर संयुक्त होता था, जिसमें कई सदस्य होते थे। रामायण तथा महाभारत जैसे महाकाव्यों से भी संयुक्त परिवार प्रथा के प्रचलन की पुष्टि होती है। मौर्यकाल से कुषाण काल तक परिवार का स्वरूप संयुक्त ही था। वैसे आंतरिक विवेचन से परिवार के टूटने का भी पता चलता है। अर्थशास्त्र और मनुस्मृति में भी संयुक्त परिवार का विशद चित्रण किया गया है।

परिवार-व्यवस्था के विशेषज्ञ समाजशास्त्रियों का मत है कि 'सभ्यता का जैसे-जैसे विकास हुआ, वैसे-वैसे परिवार संस्था के विविध रूप विकसित होते गए। सभ्यता के आरंभिक चरण आखेट और अन्नसंग्रह युग में परिवार का रूप विकसित हुआ, उसे वंश या कुल कहते हैं। मातृसत्तात्मक संयुक्त परिवार सभ्यता के दूसरे चरण अर्थात 'हो कृषि' (Hoe Agriculture) यानी फावड़ा, कुदाली पर

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 12 June 2020

आधारित कृषि और पशुपालन युग में विकसित हुआ। हल और पशुपालन पर आधारित कृषि युग में पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार विकसित हुआ जो भारत में आजतक विद्यमान है। वस्तुतः कृषि प्रधान समाज में परिवार की यही व्यवस्था सर्वप्रधान होती है।'[6]

भारत में परिवार केअनेक रूप देखे गए हैं, जैसे एक विवाही, बहु विवाही, पितृसत्तात्मक, मातृसत्तात्मक, केंद्रीय परिवार, संयुक्त परिवार आदि। इन सभी विभिन्नताओं के बीच प्राचीन भारतीय परिवार का स्वरूप 'संयुक्त परिवार' रहा है। यद्यपि प्राचीन भारतीय परिवार का बाहय स्वरूप अनेक विविधताओं का पुंज है, तथापि इसका आंतरिक स्वरूप एक है – **'संयुक्त परिवार का स्वरूप'**।

कृषिप्रधान देश होने के कारण भारत में संयुक्त परिवार की प्रथा रही है, क्योंकि कृषि कार्य के लिए अधिक सदस्यों की आवश्यकता होती थी। इसी कारण संयुक्त परिवार की प्रथा बनी रही। इसका प्रमुख आधार आपसी प्रेम, सहयोग एवं मेल–मिलाप था। इसमें परिवार के सदस्य दादा– दादी, माता-पिता, चाचा–चाची, बच्चे आदि एकसाथ सम्मिलित रूप से एक छत के नीचे प्रेमपूर्वक जीवन यापन करते थे।जहाँ एक ओर बूढ़ी थकी पीढ़ी को संरक्षण मिलता था, तो दूसरी ओर भावी पीढ़ी का निर्माण भी होता था।

वस्तुतः संयुक्त परिवार तीन या तीन से अधिक पीढ़ियों के निकट संबंधियों का एक ऐसा संगठन होता है, जिसमें सभी सदस्य अपनी संपत्ति का सही उपयोग करते हुए एक साथ रहते, भोजन करते हैं और अपने उत्तरदायित्व की भावना से बंधकर एक इकाई के रूप में कार्य करते हैं। सदस्यों में परस्पर एक–दूसरे के प्रति सहयोग और समूह की भावना के द्वारा ही सारे कार्य होते हैं। अतः संयुक्त परिवार का संगठन स्वार्थ की भावना से परे हटकर परस्पर कर्तव्यबोध की भावना पर निहित होता है। वैसे, संयुक्त परिवारों में संरचना एवं कार्यों की दृष्टि से अनेक परिवर्तन आ चुके हैं, फिर भी कुछ मूलभूत तत्व (महत्व) है जो वैदिक काल से वर्तमान काल तक संयुक्त परिवार की आधारशिला रही है।

आधुनिक भारत में परिवार का स्वरूप

 Copyright © 2020 Authors

औद्योगिकरण एवं नगरीकरण के कारण नये–नये उद्योगों और नगरों के विकास हो जाने से ग्रामीण लोगों का शहर की ओर पलायन हुआ है। फलस्वरूप संयुक्त परिवार आज पूरी तरह से टूटने लगे हैं। अत्याधुनिक बनने के चक्कर में आज व्यक्ति–व्यक्ति के बीच एकमात्र रिश्ता प्रतिस्पर्धा का है। इस प्रतिस्पर्धा की भावना के कारण व्यक्ति अत्यधिक सुख सुविधाओं एवं भोग–विलास के साधनों को जुटाने में लीन हो गया है। उसका पूरा जीवन यांत्रिक बन चुका है। 'नगरीय जीवन की इस भाग–दौड़ एवं भीड़–भाड़ के के वातावरण में व्यक्ति को स्वयं ही नहीं पता चला कि एशोआराम की ये जिंदगी उसे चंद दिनों में ही अपनों से इतना अधिक दूर ले जाएगी और उसका अपना जीवन एकाकी बनकर रह जाएगा।'[7]

पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण युवा पीढ़ी ने एक ओर पुराने जीवनमूल्यों को पूरी तरह से परिवर्तित कर दिया है, तो दूसरी ओर नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच एक द्वंद उत्पन्न हो गया है, जिसके कारण आपसी संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो गई है और जिसका पूरा प्रभाव भारतीय परिवारों पर पड़ा है। आज पारिवारिक संबंध 'अर्थ' मात्र के वशीभूत होकर रह गए हैं। जो संयुक्त परिवार थे वह धीरे-धीरे एकल परिवारों में परिवर्तित हो चुके हैं।

एक विवाहित पति-पत्नी और उसके अविवाहित बच्चों से बने एक छोटे आकार के परिवार को एकल परिवार कहा गया है। अपना व्यवसाय अथवा नौकरी आदि के कारण लोग अलग रहना अधिक पसंद करने लगे तथा नाते–रिश्तेदारी के प्रति उनकी आत्मीयता धीरे-धीरे समाप्ति की ओर बढ़ रही है। वे एक दूसरे के बंधन से अपने जीवन को मुक्त रखना अधिक पसंद करने लगे हैं। लुई विर्थ के अनुसार– "सामाजिक जीवन की इकाई के रूप में एक परिवार बड़े नातेदारी समूह से मुक्त है, जो कि गाँव की विशेषता है तथा व्यक्तिगत रूप में एकल परिवार का सदस्य अपनी स्वयं की शैक्षणिक, व्यावसायिक, धार्मिक, मनोरंजन, संबंधी तथा राजनैतिक आकांक्षाओं की पूर्ति में लगा रहता है।"[8] आज के बदलते परिवेश व्यक्तिगत स्वतंत्रता और निजी संपत्ति की भावना अधिकाधिक बढ़ती जा रही है तथा पारस्परिक कर्तव्य की भावना बिल्कुल समाप्त होने लगी है।

एकाकी परिवार की व्यस्त जीवनशैली में बच्चे खुद को अकेला महसूस करने लगे हैं। जहाँ संयुक्त परिवार में देखभाल के लिए सभी सदस्यों का सहयोग मिल जाता था, वहाँ बच्चों को भी अपनी बात को

 Copyright © 2020 Authors

प्रकट करने के लिए दादा–दादी, चाचा–चाची, बुआ-मौसी, मामा आदि दोस्त की तरह उपलब्ध होते थे। अतः कोई भी समस्या आने पर किशोर या युवा अपने सभी सदस्यों के साथ मिलकर, उस समस्या का हल खोजने का पूर्ण रूप से प्रयास करते थे, परंतु एकाकी परिवार में माता-पिता अपने बच्चे तक को समय नहीं दे पाते हैं। दरअसल, वर्तमान युग में मनुष्य अतिशीघ्र प्रगति करना चाहता है, अधिक धन एकत्रित करना चाहता है। इस भागमभाग में वह अपने संबंधियों और संबंधों को तो छोड़ता ही जा रहा है, यहाँ तक कि अपने बच्चे के अकेलेपन पर भी उसकी नजर नहीं जा रही है।

वर्तमान में नई पीढ़ी का संघर्ष पुरानी पीढ़ी से चलता रहता है। पुरानी पीढ़ी के रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा और विचारों में काफी भिन्नता होने के कारण, एकल परिवारों को अनेक समस्याओं का समाधान करना पड़ता है। आज नई पीढ़ी स्वाधीन जीवन जीना चाहती है। उनके लिए पुरानी पीढ़ी बिल्कुल व्यर्थ की चीजों के सामान है। 'एकाकी परिवार के कारण परिवार में बुजुर्गों और माता-पिता के परंपरागत महत्त्व में परिवर्तन आने पर आज माता-पिता की आवाज को उतना अधिक महत्व नहीं दिया जाता है, जितना संतान की इच्छा को।'[9] अधिकांश भारतीय परिवारों का यही स्वरूप है।

आधुनिक युग में शिक्षा का प्रचार-प्रसार बढ़ने से भारतीय स्त्रियों की स्थिति में आशातीत परिवर्तन आया है। वह आत्मनिर्भर होकर घर और बाहर दोनों उत्तरदायित्व को बखूबी निभा रही है। आर्थिक दृष्टि से भी अपना योगदान देकर अपने परिवार के स्तर को उन्नत कर रही है। संयुक्त परिवारों में महिलाओं की स्थिति केवल घर की चारदीवारी तक सीमित होकर रह गई थी, जिसका कार्य केवल खाना बनाना एवं बच्चों के पालन–पोषण तक सीमित होकर रह गया था, परंतु आज वह अपनी परंपरागत छवि एवं लज्जा को त्यागकर पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है।

जहाँ संयुक्त परिवार में संपत्ति को लेकर दिन–रात झगड़े होते रहते थे, जिससे परिवार का वातावरण पूरी तरह प्रभावित होता था और जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव बच्चों पर पड़ता था। जबकि एकल परिवार इन सभी समस्याओं से मुक्त होते हैं। दरअसल, भारत में कुछ खूबियों और कुछ खामियों के साथ अधिकांशतः एकल परिवार का स्वरूप ही दिखाई देता है।

<u>भारतीय परिवारिक– पुनरुत्थान की संभावना</u>

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 12 June 2020

आज कोविड -19 की दहशत से संपूर्ण विश्व प्रभावित है। इस दहशत से निकलना उतना आसान नहीं है। इस समय, वायरस के कारण उत्पन्न होने वाली समस्या जिन पर हमारा कोई वश नहीं है, पर चिंता करने की बजाय, हमें उन संभावनाओं पर चिंतन करना चाहिए, जो कोविड-19 के कारण ही सही, अच्छे रूप में हमारे सामने आई है।

उल्लेखनीय है कि वर्तमान वैश्विक समस्याओं के बीच, छोटे-छोटे ही सही, जो सकारात्मक पहलू नजर आ रहे हैं, वे कहते हैं – "नर हो, न निराश करो मन को।" ये संभावनाएँ प्रतिकूल परिस्थिति में हमें आशावान होकर कुछ करने का अवसर प्रदान कर रही हैं। यह सही है कि सभी संभावनाएँ, सभी व्यक्तियों या देशों के लिए एक समान नहीं हैं, परंतु व्यक्ति हो या समाज, सभी अपनी–अपनी आवश्यकताओं के अनुसार संभावनाओं की तलाश कर, देश में एक नया परिवर्तन ला सकते हैं। यदि हम समस्याओं से नजर हटाकर, संभावनाओं का अवलोकन करें, तो भारत में भी कई संभावनाएँ हैं, जिन पर हमें काम करना चाहिए, उन्हें साकार करने की कोशिश करनी चाहिए। उन्हीं संभावनाओं में से एक है- **"भारत में पारिवारिक पुनरुत्थान की संभावना"।**

आज जिस कदर लोग अन्य देशों से अपने देश की ओर, अन्य राज्यों से अपने राज्य की ओर, अन्य जिलों से अपने जिला की ओर, अन्य गाँवों से अपने गाँव की ओर, यहां तक की अन्य घरों से अपने घर की ओर बेतहाशा लौट रहे हैं कि उन्हें कहीं रुकना ही नहीं है, सिवा अपने घर के। वो घर जिसे वर्षों पहले इच्छा या अनिच्छा से, जरूरत या और अधिक पाने की चाह में, यूं ही छोड़कर चले गए थे। भागमभाग में ये भी ना सोचा कि घर की दरो–दीवार और उनके बीच बसी दो-चार जिंदगियों का क्या होगा!

बस कुछ महीने पहले की ही बात है, जिंदगी पूरी रफ्तार से चली जा रही थी और हम उसके साथ–साथ भागते जा रहे थे, भागते जा रहे थे। हमारे लिए हमारा निर्णय ही सर्वोपरि था, उससे जरा भी दाएँ–बाएँ चलनेवाले लोग हमें पसंद नहीं। हमें अपना समाज पिछड़ा हुआ लगता था, वहाँ के लोग नीरे बुद्धू दिखते थे। वहाँ के रीति-रिवाज, रहन–सहन, भाषा– बोली, खान–पान; सब के सब पिछड़े हुए और दकियानुसी; सिवा हमारे! जिंदगी ने ऐसा ब्रेक लिया की गाड़ी चलते-चलते अचानक रुक गई है। ड्राइवर को अचानक आयी इस समस्या

 Copyright © 2020 Authors

का समाधान समझ में नहीं आ रहा है, मैकेनिक को औज़ार लेकर आने में वक्त लग सकता है। ऐसे में हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने से अच्छा है, हम विवेक से काम लें। यदि बहुत दूर नहीं निकल आए हैं, तो संभव है कोई सवारी मिल जाए, जो हमें हमारे गाँव पहुँचा दे, कोई आश्रम, जहाँ हम रह सके। कोई साधन, जिससे जीविका चला सके। संभव है, हमें अनुभव हो जाए की गाड़ी की रफ्तार ना सही, परंतु पद–यात्रा करके भी गंतव्य तक पहुंच जा सकता है। वर्षों पहले पिछड़ा समझकर, जिसे पीछे छोड़ आये थे, आज उसी की पनाह में जिंदगी नजर आ रही है, वहां का जर्रा–जर्रा अपना-सा लगता है।

सबसे अच्छी बात यह है कि लोग जितने हतोत्साहित और अकुलाहट से घर लौट रहे हैं, उतनी ही संवेदना और उत्साह के साथ घर के बाकी सदस्य उनकी राह देख रहे हैं, उन्हें अपनाने के लिए तैयार हैं। किसी को किसी से कोई शिकवा–शिकायत नहीं कोई रजोगम याद नहीं। किसी भी तरह से किसी की ओर किसी की उँगली नहीं उठी हुई है; बस, बाँहें फैली हुई है, एक–दूसरे को समा लेने के लिए। यह परिदृश्य एक बहुत बड़ी संभावना की ओर संकेत कर रहा है। संयुक्त परिवार, जो भारतीय परिवार का एक आदर्श रूप था, उसे फिर से बसाने का अवसर प्रदान कर रहा है। 'पारिवारिक पुनरुत्थान' का यह बिल्कुल सही अवसर है और ऐसे अवसर के लिए ही कहा गया है– "लोहा गरम है, मार दो हथौड़ा!"

परिवार को एकसूत्र में बांधने वाला मुख्य तत्व संबंध तथा संबंधों में व्याप्त पारस्परिक प्रेमभाव है। मानव की समृद्धि उसके पारिवारिक जीवन के माध्यम से ही होती है। जीवन के उत्तम– से–उत्तम गुणों– प्रेम ,त्याग, सहानुभूति, दया, ममता आदि के आधार पर परिवार के अन्य सदस्यों के साथ संबंध विकसित होते हैं, जिससे व्यक्ति को जहां अधिक संतोष प्राप्त होता है, वहीं 'सुरक्षा' की भावना भी रहती है। उल्लेखनीय है यही 'सुरक्षा की भावना', ट्रेन, बस, ट्रक, रिक्शा, साइकिल, पैदल.... चाहे जैसे भी हो, उन्हें अपने परिवार की ओर खींच रही है। कुछ सदस्य जो घर पर पहले से ही रह रहे हैं और संकट की इस घड़ी में अकेला महसूस कर रहे हैं, वे भी चाहते हैं कि बाँकी सदस्य लौटकर आ जाएँ, तो सभी को एक दूसरे का सहारा मिल जाएगा। कोई असुरक्षित और अकेला नहीं रहेगा। वर्तमान वैश्विक वातावरण में प्रत्येक व्यक्ति आपसी प्रेम और आत्मसुरक्षा चाहता है और इसके लिए वह अपने परिवार की ओर लौट रहा है। पारिवारिक पुनरुत्थान में पुरानी और नई पीढ़ी को भी उदारता बनाए रखनी

 Copyright © 2020 Authors

होगी। हमें व्यक्तिगत प्रेम और स्वतंत्रता से एक कदम आगे सोचना होगा, क्योंकि “कुटुंब व्यक्ति प्रेम से बड़ी वस्तु है, विवाहित कुटुंब समाज को सुसंबद्ध बनाए रखने के लिए एक शक्तिशाली परंपरा है। व्यक्तिगत प्रेम से समाज के बंधन ढीले पड़ जाएँगे। कुटुंब की भावना नष्ट हो जाएगी।”[10]

वस्तुतः “जीवन स्वयं एक कहानी है। मानव की आशा–निराशा की, सुख-दुख की, धूप–छांव की, विरह–मिलन की और हर्ष–विषाद की सफलता और असफलता, उन्नति और अवनति और पतन के झूलों में झूलते मानव की कथा है जीवन। कभी वह हर्षोन्मत हो उठता है, कभी विषादग्रस्त, उसके मनोभाव और क्रिया–कलाप क्षण–प्रतीक्षण परिवर्तित होकर इस जीवन रूपी कथा को नित्य नवीन रूप देते आ रहे हैं।”[11] जीवन बहुत ही विशाल है, साथ ही गतिशील भी। इसके प्रत्येक पहलू को हमें स्वीकार करना ही होगा। समस्याओं के बीच संभावनाओं को खोजकर, नए समाज की संरचना में सहयोग करना सबका कर्तव्य है।

भारतीय पारिवारिक पुनरुत्थान की आवश्यकता–

हम जानते हैं कि बदलते परिवेश के साथ परिवार का स्वरूप भी परिवर्तित होता चला गया। संयुक्त परिवार के वैसे तो कई लाभ है, परंतु इसके साथ–साथ अलगाव, टूटन, बिखराव, पलायन आदि भी हैं। संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवार में परिवर्तित हुआ। इसमें स्त्री की स्थिति व संपूर्ण पारिवारिक संबंधों में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए, जिसका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव व्यक्ति व समाज पर पड़ा, परंतु इस पर भी अकेलेपन और अवसाद का अंधकार छाया रहा।

‘कोरोना’ महामारी के कारण भारत ऐसे दौर से गुजर रहा है, जो संयुक्त और एकल परिवार के गुण-दोष के गणित में उलझे रहने का नहीं है। बल्कि यह चिंतन–मनन करने का है कि इस समय भारत में पारिवारिक पुनरुत्थान की आवश्यकता क्यों है?

आज हमारा समाज ऐसी परिस्थिति से गुजर रहा है, जिसमें व्यक्ति एक दूसरे के संपर्क में आने से डरता है। चाहकर भी कोई किसी की सहायता नहीं करने के लिए मजबूर है। कारण, पता नहीं होता कि सामने वाला व्यक्ति कहां से आया है, किस–किस के संपर्क में रहा है। ऐसे में परिवार के सदस्यों का ही सहारा होता है। यदि बाहर से आने वाले सदस्यों का सम्बल घर में रह रहे सदस्य बन जाए और घर

 Copyright ⓒ 2020 Authors

के सदस्यों का सहयोग बाहर से आनेवाले सदस्य करें तो दोनों एक–दूसरे का हाथ थामकर, बेड़ा पार कर सकते हैं।

सर्वप्रथम तो जन–सैलाब, जो उमड़कर गाँव की ओर आ रहा है, उसे एक निश्चित आश्रय न मिला तो वह दिशाहीन हो जाएँगे। समाज में अव्यवस्था फैल जाएगी। आनेवालों में बहुत से ऐसे हैं, जिन्होंने परिवार के साथ हिसाब–किताब करके ही घर छोड़ा था और घर पर रह रहे सदस्यों को भी उनसे कोई मतलब नहीं रह गया है। आनेवालों में अधिकांश के पास न तो कोई जमापूँजी है और न ही इस बात का ठिकाना है कि कौन–सी जीविका उनके परिवार का भरण-पोषण करेगी। ऐसी स्थिति में आवश्यक है फिर से मिलकर एक हो जाने की, मिलकर कुछ करने की दृढ़ता है, वर्षो पहले हमारे साथ काफी मजबूरी थी, कृषि के अतिरिक्त, जीविका का कोई मुख्य साधन उपलब्ध नहीं था। लोग काम की तलाश में उद्योग–धंधे में काम करने के लिए शहर की ओर चले जाते थे। आज परिवेश बदल चुका है। कृषि के अतिरिक्त कौशल–विकास, लघु एवं कुटीर उद्योग आदि हैं, जिसे अपनाकर आराम से परिवार का पालन–पोषण किया जा सकता है। भूमंडलीकरण के इस दौर में हम किसी स्थान से अपने रोजगार की शुरुआत करें। किसी भी चीज का उत्पादन करें, उसका महत्व, उसकी कीमत एक समान होगी। पारंपरिक खेती के साथ-साथ विभिन्न फूलों की खेती, औषधीय पौधों की खेती, अपने–अपने पुश्तैनी काम, छोटे-छोटे स्टार्टअप, आदि जिन्हें सफलता से शुरू किया जा सकता है। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि इन सब कामों में अधिक-से– अधिक सदस्यों की आवश्यकता होती है। दु:संयोग ही सही, वर्तमान वैश्विक समस्या ने हमें यह अवसर प्रदान किया है कि हम सब इकट्ठे रहना चाहते हैं, अपना घर, गांव, शहर, छोड़कर कहीं जाना नहीं चाहते हैं। कुल मिलाकर वर्तमान परिदृश्य कुछ ऐसा दिखता है, जिसमें भारत में संयुक्त परिवार के पुनरुत्थान की परम आवश्यकता है।

सबसे महत्वपूर्ण बात, 'ठेस लगने से बुद्धि बढ़ती है'। वर्षों से बात-बेबात अपने परिवार से टूटकर, अलग रहकर हमने जो समस्याएँ झेली है; वह अभी हमारे जेहन में तरोताजा है। हमारी समझदारी इसी में है कि इस मर्ज की दवा जितनी जल्दी कर लेंगे, परेशानी उतनी ही कम होगी। जब हम सब मिलजुल कर एक साथ रहते थे, तो हर काम में, हर समय एक दूसरे का सहयोग लेते-देते थे। कालांतर में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और छोटी-छोटी सुविधाओं की ओर आकर्षित होते चले गए और परिवार पीछे

Copyright ⓒ 2020 Authors

छूटता चला गया। आज, दोनों परिवारों (संयुक्त और एकल) का प्रत्यक्ष अनुभव हमारे पास है। प्रत्यक्ष अनुभव से अब हम इतने परिपक्व हो गए हैं कि कोई भी असुविधा हमें भटका नहीं सकती है, कोई भी सुविधा अपनी और बुला नहीं सकती है, किसी की बातें हमें बहका नहीं सकती हैं।

आज हमारा गाँव गुलजार हो चुका है, बिना किसी उत्सव के मेले–सा माहौल है, हर घर में। जिस आर्थिक और मानसिक दवाब से लोग गुजर रहे हैं, उसमें इस माहौल को बनाए रखना जरूरी है। यह भी जरूरी है कि हम संयुक्त और एकल परिवार के गुणों पर विचार-विमर्श कर संयुक्त परिवार में ही एकल परिवार को बसा सकते हैं, ऐसे परिवार में हमारा आर्थिक आधार तो उन्नत हो ही सकता है, बच्चों का भी विकास होगा। रही बात स्त्री की, तो अब उनकी सोच इतनी विकसित हो चुकी है कि वह कहीं भी रह कर अपने लिए समय निकाल सकती है, आत्मोन्नति कर सकती है। अब वे न तो मजबूर है, न तो किसी की मोहताज हैं। गृह–कौशल के साथ–साथ व्यावसायिक कौशल में भी अन्य सदस्यों का हाथ बटा सकती हैं। निष्कर्षत: जिस दौर से हमें गुजरना पर रहा है, उसमें एक दूसरे का सहारा बनकर ही हम समस्या से निजात पा सकते हैं। वर्तमान वैश्विक वातावरण में हमारा कर्तव्य बनता है, और हमारी जरूरत भी है कि हम अपने परंपरागत परिवार का नयेपन के साथ पुनरुत्थान करें।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 12 June 2020

सहायक ग्रंथ-सूची

1. मानव सभ्यता एवं संस्कृति - श्यामचरण दुबे, पृष्ठ - 99

2. हिन्दू परिवार मीमांसा - हरिदत्त वेदालंकर, पृष्ठ - 901

3. भारतीय समाज संस्थाएँ - एस०एस० शर्मा, पृष्ठ - 87

4. हिन्दी उपन्यासों मैं पारिवारिक चित्रण - महेंद्र कुमार जैन, पृष्ठ - 51

5. सोसाइटी, इट्स ओर्गेनाइजेशन एंड ऑपरेशन - एंडरसना पार्कर, पृष्ठ - 160

6. भारतीय सामाजिक संस्थाएँ - प्रो० गोपीकृष्ण प्रसाद, पृष्ठ - 36 - 37

7. हिन्दू परिवारों मैं परिवर्तित प्रतिमान - डॉ० सुषमा चतुर्वेदी, पृष्ठ - 5

8. भारतीय सामाजिक व्यवस्था - राम आहूजा, पृष्ठ - 58

9. भारतीय सामाजिक संस्थाएँ - ओम प्रकाश जोशी, पृष्ठ - 178

10.बूँद और समुद्र - अमृतलाल नागर, पृष्ठ - 518

11.प्रेमचन्द्र के उपन्यास कथा संरचना - डॉ० मीनाक्षी श्रीवास्तव, पृष्ठ - 27

 Copyright © 2020 Authors